Toppersnotes
Unleash the topper in you

UGC-NET

पेपर – 2

NATIONAL TESTING AGENCY (NTA)

पेपर – 2 || भाग – 1

राजनीतिक सिद्धांत एवं राजनीतिक विचारक

SIERRA INNOVATIONS

Unit -1
राजनीतिक सिद्धांत

1.	न्याय	1
2.	स्वतंत्रता	19
3.	समानता	38
4.	अधिकार	53
5.	लोकतंत्र	63
6.	शक्ति	104
7.	नागरिकता	108
8.	उदारवाद	113
9.	अनुदारवाद	117
10.	समाजवाद	121
11.	मार्क्सवाद	124
12.	नारीवाद	125
13.	पारिस्थितिकवाद	128
14.	बहुसंस्कृतिवाद	132
15.	उत्तर – आधुनिकवाद	136

Unit -2
राजनीतिक विचारक

1.	पश्चिम विचारक	144
2.	प्लेटो	146
3.	अरस्तू	168
4.	मध्ययुगीन विचारक	183
5.	निकालो मैकियावली	191
6.	समझौतावादी विचारक	198
7.	थॉमस हाब्स	198

8.	जॉन लॉक	209
9.	जे. जे. रूसो	216
10.	उपयोगितावादी विचारक	223
11.	जर्मी बेयम	224
12.	जे. एस. मिल	230
13.	कार्ल मार्क्स	240
14.	वी. आई. लेथिन	256
15.	राजनीतिक विचारक	261
16.	कन्फूशियस	261
17.	हीगल	264
18.	मेरी वोल्स्टनोक्राफ्ट	271
19.	ग्राम्शी	274
20.	हैन्ना आरैण्ट	279
21.	फ्रांज फैनन	286
22.	माओ जेडांग	289
23.	जॉन रॉल्स	295

न्याय (Justice)

न्याय राजनीति शास्त्र का प्राचीन विषय है जो परम्परागत दृष्टिकोण से सम्बन्धित है
न्याय का ऐतिहासिक विकास इस प्रकार है- (3 चरणों मे)

(1). प्लेटो अपनी "रिपब्लीक" (Republic) में न्याय आधार सद्गुण पर आधारित कर्तव्य पालन (या मानव आत्मा से सम्बन्धित) को बताता है।

① यूनानी काल

(2). अरस्तु अपनी पुस्तक " Politics" (पालिटिक्स) मे न्याय का आधार विधि पर आधारित न्याय को महत्वपूर्ण मानता है।

(3). मध्य काल में यूरोप मे "चर्च- राज्य के मध्य संघर्ष प्रचलित था" इसलिए न्याय को लेकर भी विद्वानों के निम्न 2 मत थे।

② मध्यकाल

(अ) ईसाईवतवादी विचारक चर्च को न्याय का स्रोत मानते है इस श्रेणी के प्रमुख विचारक है-

चर्च-राज्य के मध्य संघर्ष

- पापगेल्सियस
- सेन्ट आगस्टाइन
- थांमस एक्वीनास

(TSB)

(ब) अरस्तुवादी विचारको के अनुसार न्याय का स्रोत- राज्य है। इस श्रेणी के प्रमुख विचारक है-

- मार्सी लियो डी पाडुवा
- दांते एलीघिरा

(MTM)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

③ आधुनिक युग में न्याय – (संसाधनों के वितरण संबंधी सम्बन्धित न्याय)

न्याय

अ. औपचारिक / नकारात्मक / प्रक्रियात्मक न्याय	(ब) अनौपचारिक / सकारात्मक / तात्विक न्याय
(1) योग्यता का समर्थन आरक्षण का <u>विरोध</u>	(1) योग्यता + आरक्षण का समर्थन
(2) राज्य के न्यूनतम कार्यक्षेत्र / अहस्तक्षेप	(2) लोक कल्याणकारी राज्य
(3) न्याय के 2 प्रमुख प्रकार (1) राजनैतिक न्याय (2) कानूनी न्याय	(3) न्याय के दो प्रमुख प्रकार हैं (1) सामाजिक न्याय (2) आर्थिक न्याय
(4) समर्थक – (अ) परम्परागत उदारवादी – लॉक – हर्बर्ट स्पेंसर – एडम स्मिथ (ब) स्वेच्छातंत्रवादी (1) आइजिया बर्लिन (2) एफ.ए. हेयक	(4) समर्थक – (अ) सकारात्मक उदारवादी – लास्की – मिल – ग्रीन (ब) समतावादी – जान रॉल्स, अमर्त्य सेन (स) समूहवादी

Toppersnotes
Unleash the topper in you

Not — 1. उदारवादी - स्वतन्त्रता पर

2. समाजवादी — समानता पर

3. समुदायवादी - बंधुता पर बल देते है।

उदारवादी विचारधारा पूर्णतः पूंजीवादी विचारधारा पर आधारित है जिसका विकास इस प्रकार हुआ →

उदारवाद

① परम्परागत | शास्त्रीय | व्यक्तिवाद उदारवाद
- ① — योग्यता का समर्थन, आरक्षण का विरोध
- ② राज्य का न्यूनतम कार्य क्षेत्र
- ③ समर्थक - जान लॉक, हरबर्ट स्पेंसर, एडम स्मिथ

② सकारात्मक उदारवाद
- ① योग्यता + आरक्षण का समर्थन
- ② कल्याणकारी राज्य
- ③ समर्थक - मिल, लास्की, ग्रीन

③ समकालीन उदारवाद

स्वेच्छातन्त्रवादी
- राज्य के अन्तर्गत
- आइजिया बर्लिन
- एफ. ए. हेयक
- मिल्टन फ्रीडमैन
- रार्बट नॉजिक

नवउदारवाद
- अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति मे परम्परागत उदारवाद के गुणो को अपनाना चाहते है - इसके प्रमुख समर्थक —
  पास्कल लामी

समतावादी
- योग्यता + आरक्षण
- लोक कल्याणकारी राज्य
- समर्थक - जॉन रॉल्स, अमर्त्य सेन, अरविन्द पनगढ़िया, जगदीश भगवती, अशोक कोतवाल

- आधुनिक न्याय का मूल विषय- संसाधनो का वितरण है।
- संसाधनो के वितरण को लेकर आधुनिक युग में दो (2) धारणाएं हैं।

अ. योग्यता के आधार पर वितरण-
- इसे औपचारिक | नकारात्मक | प्रक्रियात्मक न्याय का सिद्धान्त भी कहते हैं-
- 1. इस अवधारणा के अनुसार संसाधनो के वितरण का आधार- योग्यता होना चाहिए 3. और आरक्षण का विरोध।

2. यह राज्य के न्यूनतम् कार्य क्षेत्र का समर्थन करती है।

3. यह शाखा (2) दो प्रकार के न्याय के सिद्धान्त का समर्थन करती है-

(A) राजनीतिक न्याय- यह समान मताधिकार व सभी को चुनाव लड़ने के अधिकार का समर्थन करते हैं।

(B) कानूनी न्याय- अर्थात विधि के समक्ष सभी समान हैं। अतः विधि के समक्ष समानता का समर्थन करता है।

4 समर्थक हैं-
(अ) परम्परागत उदारवादी- (लॉक, हरबर्ट स्पेंसर, एडम स्मिथ)
(ब) स्वेच्छातन्त्रवादी- (आइजिया बर्लिन, एफ ए हेयक, मिल्टन फ्रीडमेन, रॉबर्ट नॉजिक)।

(स) अन्य समर्थक- लार्ड एक्टन
डी. टकविले
जेम्स ब्राइस

Toppersnotes
Unleash the topper in you

अनौपचारिक / सकारात्मक / तात्विक न्याय (substantive) →

1. यह शाखा योग्यता के साथ आरक्षण पर विशेष जोर देती है।
2. राज्य की कल्याणकारी भूमिका का समर्थन करती है।
3. यह शाखा भी 2 प्रकार के न्याय के सिद्धान्त का समर्थन करती है।

(A) सामाजिक ~~न्याय~~ न्याय

देश के संसाधनों का वितरण इस प्रकार करना कि सबसे पिछड़े वर्ग को उसका उचित भाग प्राप्त हो।

(B) आर्थिक न्याय →

सभी की न्यूनतम आवश्यकता (जैसे – रोटी, कपड़ा और मकान) की पूर्ति हो।

Q. समर्थक —

(1) सकारात्मक उदारवादी – मिल
लास्की
ग्रीन
हॉब हाउस
रोलाई

(2) समतावादी – जोन रोल्स
अमर्त्य सेन
जगदीश भगवती
अशोक कोतवाल

(3) समुदायवादी – माइकल वॉल्जर
इत्ता आरेट
विल किमलिका
~~नीरा~~ नीरा चंधोक
रोनाल्ड डर्वकिन

(4) समाजवादी

Toppersnotes
Unleash the topper in you

1. जॉनराल्स का न्याय का सिद्धान्त :-

- अमेरिका का राजनीतिक दार्शनिक
- गोरे-काले का नृजातीय संघर्ष को दूर करना
- A Theory of Justice (1971) में दिया
- लॉक व कान्ट से प्रभावित होकर "प्राकृतिक अवस्था की परिकल्पना करता है जिसे मूल स्थिति कहते है -
  1. अज्ञान के पर्दे के पीछे
  2. नैतिकता के स्थान से दूर
  3. विवेकशील
  4. प्राथमिक वस्तुओं (पद, पैसा, न्याय स्वतन्त्रता, अधिकार) के वितरण के बारे में कानून
- न्याय के न्यूनतम न्याय के नियम
  1. समान स्वतंत्रता नियम
  2. सामाजिक आर्थिक नियम
  - (a) तर्क संगठन के सकारात्मक कार्य करना
  - (b) अवसर की समस्या

→ जान रॉल्स के न्याय सिद्धान्त की विशेषताएँ 4

- प्रगति / न्याय से संघर्ष होने पर न्याय पर (नॉजिक का कथन)
- शुद्ध प्रक्रियात्मक प्रगति + आरक्षण
- हस्तांतरण शाखा (न्यूनतम आवश्यकता की पूर्ति)
- पूर्व सामाजिक विकास पर बल)

जान रॉल्स अमेरिकी राजनीति अर्थनीति समानतावादी विचारक है।
जान राल्स अमेरिका मे गोले-काले संघर्ष (प्रजाति संघर्ष) को दूर करने के लिए अपनी पुस्तक A Theory of Justice (1971) मे न्याय का सिद्धान्त देता है।

– जॉन राल्स का न्याय का सिद्धान्त लॉक व कान्ट से प्रभावित था।

–

जॉन राल्स लॉक की "प्राकृतिक अवस्था की संकल्पना" से प्रभावित होकर "मूल स्थिति की संकल्पना" देता है।

– जान रॉल्स इस मूल स्थिति की निम्न विशेषताएँ बताता है।

1. इसमें व्यक्ति अज्ञान के पर्दे के पीछे रहेंगे। अर्थात व्यक्ति भौतिकवादी (छल-कपट से दूर) ज्ञान से परे होगा।

2. सभी व्यक्ति नैतिकता के बंधन से बंधे होंगे।

3. व्यक्ति विवेकशील होंगे अर्थात उनको छोटा-मोटा अर्थ का ज्ञान भी होगा व वे तार्किक होंगे।

4. व्यक्ति प्राथमिक वस्तुओं (पद, पैसा, स्वतन्त्रता, अधिकार) के वितरण के बारे मे नियम बनायेंगे।

5. मूलस्थिति मे व्यक्ति न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति पर/क्षतिपूर्ति पर आधारित नियम बनायेंगे।

6. मूल स्थिति मे व्यक्ति सामाजिक समझौते के माध्यम से न्याय के नियम बनायेंगे।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

7 जॉन रॉल्स के अनुसार व्यक्ति न्याय के नियम (न्याय के उचित क्षेत्र) बतायेंगे।

(1) समान स्वतन्त्रता का नियम - सभी व्यक्तियों को पहले स्वतंत्रता का अधिकार दिया जायेगा (संविधान के Art 19)

(2) सामाजिक आर्थिक नियम - इस नियम के अन्तर्गत जॉनरॉल्स नियम बताता है।
(a) अवसर की समानता (संविधान के Arts - 16(1)(2),
(B) तर्कसंगत भेदभाव / उल्टा भेदभाव / आरक्षण / सकारात्मक कार्यवाई अर्थात गरीबो को आरक्षण - (Art 15(4), 16(4)

→ जॉन राल्स के अनुसार उपयुक्त न्याय के नियम को क्रमानुसार ही लागू किया जाना चाहिए अर्थात 1 2(A) 2(B)

न्याय सिद्धान्त की विशेषता :-

(1) प्रगति / न्याय में संघर्ष होने पर न्याय का पक्ष लेना चाहिए क्योंकि " कोई भी समाज जंजीर के समान होता है। और कोई भी जंजीर, सबसे कमजोर कड़ी से ज्यादा मजबूत नही होती है।

(2) हस्तान्तरण शाखा पर बल :-

रॉल्स के अनुसार हस्तान्तरण शाखा पिछड़े वर्ग को न्याय प्रदान करने का कार्य करेगी।
जैसे :- यह भारत की उचित मूल्य की दुकाने / राशन की दुकान के समान है।

सम्पूर्ण समाज के विकास पर जोर–

रॉल्स का न्याय सिद्धान्त सम्पूर्ण समाज के विकास पर जोर देता है। इसी आधार पर रॉल्स बेंथम के उपयोगितावादी सिद्धान्त की आलोचना करता है कि बेंथम का उपयोगितावाद केवल 51% के विकास पर जोर देता है जबकि 49% की अवहेलना करता है।

4. रॉल्स के अनुसार उसका न्याय सिद्धान्त शुद्ध प्रक्रियात्मक न्याय का सिद्धान्त है। क्योंकि इस सिद्धान्त में योग्यता (प्रगति) व आरक्षण दोनों को अपनाया गया है

जैसे 1, 2 (A) नियम तो योग्यता पर बल देता है।

2 (B) आरक्षण पर बल देता है।

वस्तुतः जॉन रॉल्स 3 प्रकार के न्याय सिद्धान्तों की चर्चा करता है–

पूर्ण प्रक्रियात्मक	अपूर्ण प्रक्रियात्मक	शुद्ध प्रक्रियात्मक
योग्यता और निष्पक्षता पर जोर जैसे– कैसिनो के खेल में।	मानदण्ड या मूल्य/ आरक्षण पर जोर जैसे– केक काटने व बाटने वाला सबसे अन्त में केक का टुकड़ा लेगा।	योग्यता + आरक्षण, निष्पक्षता + मानदण्ड

ॐ — रॉल्स का जीवन काल — (1921 — 2002 तक)

इनकी प्रमुख पुस्तकें निम्न हैं-

नोट — A Theory of Justice (1971)

- Justice of fairness (1985) — इसमें न्याय के नियमों को उचित शर्तों की संज्ञा दी
- Political leberlism (1993)
- On Background Justice (1995)
- The laws of Peoples (1997)
- lectures on the History of Moral Philosophy (2000)

आलोचना — रॉल्स के न्याय सिद्धान्त की आलोचना समाजवादी व स्वच्छन्दतावादी दोनों करते हैं।

1. — समाजवादियों का कहना है कि जॉन रॉल्स पूँजीवाद में न्याय ढूंढता है पूंजीवाद न्याय की सम्भावना नहीं है।

2. — स्वेच्छातंत्रवादी कहते हैं कि रॉल्स ने आरक्षण को अपनाकर प्रगति की अवहेलना की है।

3. — समतावादी अमर्त्य सेन भी अपनी पुस्तक " Idea of Justice " रॉल्स की आलोचना करता है और लिखता है कि जहां रॉल्स आरक्षण सबसे अन्त में लागू करता है जबकि आरक्षण को सबसे पहले लागू करना चाहिए। इनका कथन है कि —
जान रॉल्स "बांसुरी तो सभी को बांटता है लेकिन बजाना नहीं सिखाता है",

महत्व

1. जान रॉल्स के न्याय सिद्धान्त के माध्यम से नृजातीय संघर्ष की समस्या का समाधान किया गया है।

→ अर्थात पिछड़े वर्गों को आरक्षण दे रहे हैं।

→ भारत ने भी उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र मे अलगाववादी / आंतकवादी समस्या का समाधान जान रॉल्स के अनुरूप किया। श्रीलंका भी अपनी तमिल समस्या का समाधान जान्स रॉल्स के अनुरूप कर रहा है।

2. 1991 के बाद भारत मे जान रॉल्स के अनुरूप प्रगति और न्याय मे समन्वय किया जा रहा है जैसे 8% आर्थिक वृद्धि के साथ-2 गरीबो के कल्याण पर बल।

3. WTO मे भी रॉल्स के अनुसार प्रगति व आरक्षण दोनो को अपनाया जा रहा है
जैसे- 2013 मे बाली मंत्रिस्तरीय सम्मेलन मे सब्सिडी पर सहमति बनी है।
- विकासशील देशो को कृषि सब्सिडी देना।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

२. माइकल वाल्जर का न्याय का सिद्धान्त :-

यह समुदायवादी विचारक है जो बन्धुता व कर्तव्य पालन पर विशेषबल देता है।

→ माइकल वाल्जर अपनी पुस्तक "स्फीयर्स ऑफ जस्टिस" 1983 में जान राल्स की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप न्याय का सिद्धान्त प्रस्तुत करता है जिसकी निम्न विशेषता बताता है :-

(1) बहुलवादी विषय क्षेत्र पर आधारित न्याय होना चाहिए अर्थात् अलग-२ क्षेत्रो के लिए न्याय के नियम अलग-२ होने चाहिए।

(२) बहुलवादी वस्तु क्षेत्र का नियम है- बहुलवादी वस्तु क्षेत्र पर आधारित होना चाहिए अर्थात् एक क्षेत्र की विभिन्न वस्तुए के लिए भी न्याय के नियम अलग होने चाहिए। जैसे - आर्थिक क्षेत्र की वस्तु A.C पर कर अधिक लगाना चाहिए तथा रोटी, ब्रेड पर — " कम " ।

(3) माइकल वाल्जर जटिल समानता पर अधिक बल देते है। अर्थात आर के अन्दर आरक्षण (Setting of Setting) को महत्वपूर्ण मानता है।

जैसे - S.C., S.T. और O.B.C में महिलाओं को आरक्षण।

— S.T को TSP में आरक्षण।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

4. माइकल वाल्जर का सिद्धान्त लोकतांत्रिक बहुलवादी विकेन्द्रीकृत समाज मे लागू हो सकता है।

5. इनके अनुसार कर्तव्य पालन व बंधुता पर बल देना चाहिए।

निष्कर्ष-

यह सिद्धान्त सैद्धान्तिक रूप से तो अच्छा है लेकिन व्यावहारिक नही है। अर्थात इसको व्यवहार मे अपनाना कठिन है।

- फिर भी आज अनेक लक्षणो को आज अपनाया जा रहा है।

जैसे- (1) आज भारत में विभिन्न क्षेत्रो में लिए अलग -2 न्यायाधिकरण स्थापित किये जा रहे है। कर विभाग न्यायधिकरण, बीमा सम्बंधी न्यायधिकरण

(2) इसी प्रकार भारतीय संविधान के Art. 323 (A), 323 (B) भी माइकल वाल्जर के बहुलवादी विषयक्षेत्र की अवधारणा पर आधारित है।

- ये अनुच्छेद 42 वे संविधान संशोधन (1976) द्वारा जोड़े गये।

Unleash the topper in you

(3) रॉबर्ट नॉजिक - स्वेच्छातंत्रवादी विचारक है।
- यह प्रगतियोग्यता पर बल देता है व आरक्षण की आलोचना करता है और राज्य के न्यूनतम कार्यक्षेत्र का समर्थन करता है
- यह अपनी पुस्तक " एनार्की स्टेट एण्ड यूटोपिया " में 1974 में न्याय की विशेष चर्चा करता है।
- यह न्याय के 2 दो सिद्धान्त बताता है।

(1). साध्यमूलक न्याय
मानदण्ड + आरक्षण

(2) ऐतिहासिक मूलक / अधिकारिता /
- केवल योग्यता।

(1). साध्य मूलक न्याय → इस प्रकार न्याय मानदण्ड व आरक्षण पर बल देता है। नॉजिक का कहना है कि इसकी प्राप्ती में बाधा पहुचती है। इसलिए हमें इस सिद्धान्त पर बल नही देना चाहिए उनका कहना है कि बेंथम का न्याय सिद्धान्त इसी श्रेणी का।

(2) ऐतिहासिक मूलक → रॉबर्ट नॉजिक के अनुसार यदि किसी व्यक्ति ने कोई संपत्ति इतिहास से न्यायपूर्ण तरीके से अर्जित की है तो वह उनका पूर्णस्थायी होगा।

राज्य को ऐसी संपत्ति पर कर नही लगाना चाहिए रॉबर्ट नॉजिक इसे हकदारीता का सिद्धान्त कहता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

राबर्ट नॉजिक का यह सिद्धान्त प्रगति (पोजमत।) के अनुकूल है इसलिए श्रेष्ठ है

इस सिद्धान्त के तीन (3) नियम है-

1. न्यायपूर्ण अधिग्रहण का नियम- किसी व्यक्ति ने कोई वस्तु न्यायपूर्ण तरीके से अर्जित की है तो वह उसका पूर्ण स्वामी है और राज्य को उस पर कर नही लगाना चाहिए।

2. न्यायपूर्ण स्थानान्तरण का नियम - यदि किसी व्यक्ति ने कोई वस्तु न्याय पूर्ण तरीके से प्राप्त की है तो वह उसे कितने मे भी स्थानान्तरण (विक्रय कर सकता है)

3. परिष्करण का नियम इसमे कहता है कि इतिहास मे कोई गलती हुई तो उसमे छोटा मोटा सुधार किया जा सकता है। अतः नॉजिक आरक्षण के स्थान पर छात्रवृत्ति की बात करता है। समर्थन

- नाजिक के अनुसार उसका न्याय सिद्धान्त पूंजीवादी लोकतांत्रिक समाज में लागू हो सकता है उसमें राज्य की शक्ति का अन्त हो जायेगा अर्थात यूटोपिया की स्थिति आ जायेगी। नाजिक पैटेन्ट व्यवस्था का भी समर्थन करता है लेकिन कहता है कि यदि मरुस्थल मे पानी का एक स्त्रोत है तो उस पर पेटेन्ट नही हो सकता है।